
कविकुलगुरु - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल.क्र. M-2784 विषय -

नाव पंचिकरण

लेखक/लिपीकार -

पृष्ठ 29 काळ - पुर्ण/ अपुर्ण



अथ पंचीकरणप्रा०



श्रीगणेशायनमः।

पंचीकरणमहावाक्यप्रारंभः।

देह	अवस्था	शक्ति	गुण	अभिमानी	भोग	मात्रा	स्थान	आत्मा	मुक्ति	वाक्	चरण
विराट	उत्पत्ति	क्रिया	रज	ब्रह्मा	कर्तृत्व	अकार	सूर्य	भूतात्मा	सलोकता	वैखरी	प्रथम
हिरण्यगर्भ	स्थिति	इच्छा	सत्व	विष्णु	पालकत्व	उकार	चंद्र	ज्ञानात्मा	समीपता	मध्यमा	द्वितीय
माया	प्रलय	द्रव्य	तम	रुद्र	संहार	मकार	अग्नि	शुद्धात्मा	सरूपता	पश्यंती	तृतीय

ज्ञा. क्र. तिन्ही देह, तिन्ही अवस्था, तिन्ही शक्ति, तिन्ही गुण, तिन्ही अभिमानी, तिन्ही भोग, तिन्ही मात्रा, तिन्ही स्थानें, तिन्ही आत्मे, तिन्ही मुक्ति, तिन्ही वाचा, तिन्ही चरण, या तिन्हीं-चा साक्षी चौथा देह, आतां त्याचा विस्तार ॥ १ ॥ पं. क्र.

१

मूलप्रकृति देह	सर्व साक्षी आत्मा	ज्ञान-शक्ति	शुद्ध सत्व गुण	ईश्वर अभि-मानी	षड्गुणैश्वर्य भोग	ओंकारमातृ-का	स्वप्रकाश स्थान	महान् आत्मा	सायुज्यता मुक्ति	परावा-क्	चतुर्थ-चरण

चारी देह, चारी अवस्था, चारी शक्ति, चारी गुण, चारी अभिमानी, चारी भोग, चारी मात्रा, चारी स्थानें, चारी आत्मे, चारी, मुक्ति, चारी, वाचा, चारी चरण ऐसा तत्पद ईश्वराचा विस्तार सांगितला. आतां जीवपिंडाचा विस्तार सांगिजेतो ॥ २ ॥ १

देह	अवस्था	गुण	अभिमानी	भोग	मात्रा	स्थान	वाक्	चरण	देवता
स्थूल	जागृति	रज	विश्व	स्थूल	अकार	नयन	वैखरी	प्रथम	ब्रह्मा
सूक्ष्म	स्वप्न	सत्व	तैजस	प्रविविक्त	उकार	कंठ	मध्यमा	द्वितीय	विष्णु
कारण	सुषुप्ति	तम	प्राज्ञ	आनंद	मकार	हृदय	पश्यंती	तृतीय	रुद्र

ऐसे हे तीन देह, तीन अवस्था, तीन गुण, तीन अभिमानी, तीन भोग, तीन मात्रा, तीन स्थानें, तीन वाचा, तीन चरण, तीन देव. आतां तिहीं देहांस साक्षी जो चौथा देह, तो सांगिजेतो ॥३॥

ज्ञा. क्र. २

महा कारण देह	तुर्यावस्था	शुद्ध सत्व गुण	प्रत्यगात्मा अभिमानी	ज्ञेय भोग	ओंकारमात्रा	मूर्धा स्थान	परावाक्	चतुर्थ चरण	ईश्वर देव

पं.क्र.

एक एक देह यांत पंचभूतांचा कर्दम निश्चित विभागें बोलिजे विस्तारगत तें स्थूलदेह कर्दम ॥ ४ ॥

आकाश	काम	क्रोध	शोक	मोह	भय	५
वायु	धावन	लवण	प्रसरण	आकुंचन	निरोधन	५
तेज	क्षुधा	तृषा	अलस	निद्रा	मैथुन	५
आप	लाळ	मूत्र	शोणित	मज्जा	रेत	५
पृथ्वी	अस्थि	नाडी	मांस	त्वक्	रोम	५

२

स्थूल देह	जागृती अवस्था	विश्व अभिमानी	रजोगुण स्थूल भोग	अकार मात्रा	नयन स्थान	वैखरी वाक्	प्रथम चरण	ब्रह्म-देव

सूक्ष्मदेहपंचभूतकर्दम.

नभ	अंतःकरण	मन	बुद्धि	चित्त	अहंकार	५
वायु	व्यान	समान	उदान	प्राण	अपान	५
दहनअग्नि	श्रोत्र	त्वक्	चक्षु	जिह्वा	घ्राण	५
जल	वाक्	पाणि	पाद	शिश्न	गुद	५
महीपृथ्वी	शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गंध	५

२

सूक्ष्म देह	स्वप्नावस्था	सत्वगुण	तैजस अभिमानी	प्रविविष्ट भोग	उकार मात्रा	कंठ स्थान	मध्यमा वाक्	द्वितीय चरण	विष्णु देव

आतां अष्टपुरीलिंगदेह.

अविद्या	काम	कर्म	अंतःकरणपंचक	प्राणपंचक	कर्मेंद्रियपंचक	ज्ञानेंद्रियपंचक	विषयपंचक

लिंगदेहाचा पंचक पंचवीस तत्त्वांस अध्यात्म अधिभूत २
अधिदैवत सांगितलें तें ऐका ॥ ६ ॥

अंतःकरणपंचक.

अध्यात्म	अधिभूत	अधिदैवत
अंतःकरण	निर्विषय	विष्णु
मन	मंतव्य	चंद्रमा
बुद्धि	बोद्धव्य	ब्रह्मा
चित्त	चेतयितव्य	नारायण
अहंकार	अहंकर्तव्य	गौरीरमण

प्राणपंचक.

अध्यात्म	अधिभूत	अधिदैवत
व्यान	भोक्तव्य	नाग
समान	व्यातव्य	कूर्म
उदान	कर्तव्य	कृकल
प्राण	पक्तव्य	देवदत्त
अपान	विसर्जयितव्य	धनंजय

ज्ञानेंद्रियपंचक.

अध्यात्म	अधिभूत	अधिदैवत
श्रोत्र	श्रोतव्य	दिशा
त्वक्	स्प्रष्टव्य	पवन
चक्षु	द्रष्टव्य	सूर्य
जिह्वा	रसयितव्य	वरुण
घ्राण	घ्रातव्य	अश्विनौदेव

कर्मेंद्रियपंचक.

अध्यात्म	अधिभूत	अधिदैवत
वाक्	वक्तव्य	अग्नि
पाणि	ग्रहीतव्य	इंद्र
पाद	गंतव्य	त्रिविक्रम
शिश्न	आनंदयि-तव्य	प्रजापति
गुद	विसर्जयि-तव्य	निर्ऋति

विषयपंचक.

अध्यात्म	अधिभूत	अधिदैवत
शब्द	शब्दयितव्य	नभ
स्पर्श	स्पर्शयितव्य	पवन
रूप	द्रष्टव्य	दहन
रस	रसयितव्य	जल
गंध	घ्रातव्य	मही
ज्ञान	विकारयितव्य	पुरुष

ऐशीं लिंगदेहाचीं तत्वें पंचवीस. आतां कारणदेहपंचभूतकर्दम.

ज्ञा. क्र. ५

व्योम	अवकाश	विस्मृति	आवरण	निरावरण	प्रमाण	५
मारुत	भ्रांति	शंका	शोषण	शीतल	धैर्य	५
वह्नि	गूढत्व	रूढत्व	कृतघ्नत्व	अविचार	अक्लेश	५
नीर	मृदुत्व	पोषणत्व	हळहळ	क्लेद	धारण	५
धरणी	वेळ	लज्जा	पिंडीकरण	मूढत्व	कठिनत्व	५

पं. क्र. ५

कारण देह	सुषुप्ति अव- स्था	तमो गुण	प्राज्ञ- अभि- मानी	मकार मात्रा	आनं- दभोग	हृदय स्थान	पश्यं- ती वा- क्	तृती- य चर- ण	रुद्र देव

या तिहींस साक्षी महाकारणदेह पंचभूतकर्दम सांगिजेतो ॥६॥

गगन	पूर्णत्व	असगत्व	व्यापकत्व	सर्वबीजत्व	असंडत्व
पवन	अजत्व	आच्छेदन	परात्परत्व	निर्मलत्व	अजरत्व
दहन	अधार्यत्व	ऊर्ध्वपद	प्रकाशत्व	पज्ञत्व	आनंदत्व
जीवन	अक्लेदत्व	जीवनत्व	ज्योतित्व	अमृतत्व	कृपालुत्व
भुवन	अशोषत्व	कारणत्व	पावनत्व	समृद्धि	सर्वाधारत्व

ज्ञा. कृ. ६

महाकारण देह	तुर्यावस्था	शुद्ध सत्व गुण	प्रत्यगात्मा अभिमानी	ज्ञेय भोग	ओंकार मात्रा	मूर्धास्थान	परावाक्	चतुर्थ चरण	ईश्वर देव

ऐसा पिंडींचेचारीदेहांचाविस्तार. आतांअष्टदेहांचेप्रकारऐका.

देह	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	महाकारण	आनंद	चिन्मय	चिद्रूप	शुद्ध
आत्मा	जीवात्मा	अंतरात्मा	परमात्मा	निर्मलात्मा	शुद्धात्मा	ज्ञानात्मा	भूतात्मा	महात्मा
प्रकृति	भूमि	आप	अनल	वायु	आकाश	मन	बुद्धि	अहंकार

पं. क. ६

श्लोक—आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ल-
लाटे। द्वैपत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के॥ वा-
सांते बलमघोडफकठसहिते कंठदेशे स्वराणाम्। हंक्षं तत्वार्थ-
युक्तं सकलदलयुतं वर्णरूपं नमामि॥ १

आतां या श्लोकींचो व्युत्पत्ति षट्चक्रें सांगिजेति ते ऐका.

षट्चक्रें पिंडींचीं.

चक्र	स्थान	दल	वर्ण	ऋषि	देवता	शक्ति	जप	प्रमाण	मातृका
आधार	गुद	चतुर्दल	रक्त	ईश्वर	गणेश	डाकिनी	६००	चतुरंगुळ	वशषस ४
स्वाधिष्ठान	लिंग	षड्दल	पीत	भानु	ब्रह्मा	सावित्री	६०००	षडंगुल	बभमयरल६

मणि-पूर	नाभि	दश-दल	नील	पवन	विष्णु	लक्ष्मी	६०००	दशांगुल	डढणत थदधनप फ १०
अनुहत	हृदय	द्वादशदल	अक्ति	इंद्र	रुद्र	उमा	६०००	द्वादशांगुल	कखगघ ङ चछज झञटठ १२
विशुद्ध	कंठ	षोडशदल	शुभ्र	अग्नि	जीव	अविद्या	१०००	षोडशांगुल	अआइई उऊ इत्या० १६
अग्नि	नासिका	द्विदल	शेंदुर	परमहंस	परमात्मा	माया	१०००	दोन अंगुल	हं क्षं २

आतां सहस्रदल कमल.

सहस्त्रदळकमळ	शिरस्थान	सहस्त्र दळ	नानावर्ण	ज्ञान ऋषि	गुरुदेवता	चित् शक्ति	जप १०००	राम हरि

असो हीं त्वंपदजीव पिंडाचीं चक्रें. आतां ब्रह्मांडींचीं चक्रें सांगिजेती-

चक्रें	लिंग	भक्त	ऋषि	वेद	वाक्	वर्ण	गुण	देह	अवस्था	अभिमानी	मातृका	मुक्ति
त्रिकूट	आचार	ब्रह्मा	पृथ्वी	ऋग्वेद	वखरी	पीत	रज	स्थूल	जागृती	विश्व	अकार	सलोकता
श्रीहाट	गुरु	विष्णु	आप	यजुर्वेद	मध्यमा	मौक्तिक	सत्व	सूक्ष्म	स्वप्न	तैजस	उकार	समीपता
गोल्हाट	शिव	रुद्र	तेज	सामवेद	पश्यंती	श्वेत	तम	कारण	सुषुप्ति	प्राज्ञ	मकार	सरूपता

ज्ञा. क्र.														पं. क्र.
	औट पीठ	जंगम	ईश्वर	वायु	अथर्वणवेद	परा	विद्युत्	शुद्ध सत्व गुण	महाकारण	तुर्या	प्रत्यगात्मा	ओंकार	सायुज्यता	
८	भ्रमर गुंफा	प्रसाद	सदाशिव	आकाश	सूक्ष्मवेद	परात्पर	कृष्ण	सगुण	ज्ञान	उन्मनी	ज्ञानात्मा	अर्ध मात्रा	कैवल्य	
	ब्रह्मरंध्र	महा लिंग	परमात्मा	परम पुरुष	आत्म वेद	अनुभव	सर्व	निर्गुण	आनंद	सर्व साक्षी	महात्मा	ब्रह्म मात्रा	पूर्णता	

हीं ब्रह्मांडींचीं चक्रें सांगितलीं. हींच सहा देहांचीं आणीक चार देह.

अधः शून्य	उल्लेख स्वरूप	शिवअधिष्ठानी	पिंडब्रह्मांड्व्यापून	मध्य शून्य	अनुहत शब्द	विष्णु स्वरूप	भावअभावविहित	८

ऊर्ध्व शून्य	निरं- जन	शिव- स्वरूप	सर्व- साक्षी	विश्वं भर	महा- शून्य	निर्वि- कल्प	अप्रमे य	अल- क्ष	परब्रह्म- स्वरूप

आणिक पंचशरीरें.

सदयजा त	वामदेव	तत्पुरुष	अघोर	ईशान्य

ईश्वराचीं पंचमुखें यांपासून सृष्टि निर्माण.

ईशान्य नभ	तत्पुरुष वायु	अघोर तेज	वामदेव जल	सदय जात भूमि

हे ब्रह्मांडींचा विस्तार पंचदशदेह सांगितले. आतां पिंडींचीं छत्तीस तत्त्वें सांगिजेती तें ऐका. ॥ ॥ ॥

ज्ञा. क्र.

ब्रह्म	माया	महत्तत्त्व	सत्व	रज	तम
नभ	वायु	तेज	आप	पृथ्वी	अंतःकरण
मन	बुद्धि	चित्त	अहंकार	व्यान	समान
उदान	प्राण	अपान	श्रोत्र	त्वक्	चक्षु
जिह्वा	घ्राण	वाक्	पाणि	पाद	शिश्न
गुद	शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गंध

प. क्र.

१

१

आतां यांचीं दैवतें सांगिजेती ऐका.

ब्रह्मींब्रह्म माया	मायास्फूर्ती	महत्तत्त्वइच्छा	सत्वविष्णु	रजब्रह्मा	तमरुद्र
नभ सदा शिव	वायु ईश्वर	तेज रुद्र	आप हरी	पृथ्वीधाता	अंतःकरण वासुदेव
मनचंद्रमा	बुद्धि विरंची	चित्त नारा-यण	अहंकार गौरीपति	व्याननाग	समान कूर्म
उदान कृकल	प्राण देवदत्त	अपान धनं-जय	श्रोत्र दिशा	त्वक् पवन	चक्षुसूर्य
जिह्वा वरुण	घ्राणअश्वि-नौ देव	वाक् अग्नि	पाणि इंद्र	पाद वामन	गुदनि-ऋति
शब्द व्योम	स्पर्श वायु	रूप तेज	रस जल	गंध पृथ्वी	शिश्न प्रजापति

यांची करणी काय, ब्रह्म निर्गुण निराकार निरंजन जैसें आहे, निर्वाच्यामय सगुण निर्गुण घडवी, जग निर्माण इहीं पासूनि स्फुरवि, महातत्त्व सकळ उत्पत्ती करी, उत्पत्ति स्थिति प्रळय ह्या पासोन इच्छा ॥ ॥ ॥ ॥

सत्व	विष्णु	प्रतिपालन	अंतःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार.
रज	ब्रह्मा	उत्पत्ति	व्यान, उदान, समान, प्राण, अपान, श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण.
तम	रुद्र	प्रळय	वाक्, पाणि, पाद, शिश्न, गुद, आकाश, वायु, तेज, आप, पृथ्वी.

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध.

पंचवीस तत्त्वें गुणाचे कर्दम.

सत्व	अंतःकरण	श्रोत्र	वाक्	आकाश		
रज	मन बुद्धि चित्त	त्वक् चक्षु जिह्वा	पाणि पाद शिश्न	वायु तेज आप	समान उदान प्राण	स्पर्श रूप रस
तम	अहंकार	घ्राण	गुद	पृथ्वी	अपान	गंध

वृत्तिपंचकाचें रूप.

अंतःकरण निर्विषय	मन संकल्प, विकल्प	बुद्धि पदार्थ निश्चय	चित्त चिंतन	अहंकार पदार्थीममता

पंचप्राणांची क्रिया आणि रूप तसेंच पंचदशवायु सांगिजेती तें पुढें ऐका.

पंचभूतांचीक्रिया.

आकाश वायु व्यापून राहे		वायु चलन वलन करी		अग्निप्रकाश दहन करी		आप वाहे जीव निववी		पृथ्वी सकल निर्माण आधार		
वायु	प्राण	अपान	व्यान	उदान	समान	नाग	कूर्म	कृकल	देवदत्त	धनंजय
वर्ण	नील	हरित	गोक्षीर	कांचन	मणि	पीत	श्वेत	अंजन	स्फटिक	हेमवर्ण
स्थानें	हृदय	गुद	सर्व संधि	कंठ	नाभि	ताळु	नयन	कर्ण	मुख	नासिका
क्रिया	अन्न पचन करी	मलमूत्रविसर्जन	अन्न रस वाटी	खोंके शिंके	रोम चळवी	प्राण नस्त तीचळवी	मुख पसरूनझाकी	क्षुधादि गमनागमन	उठेबैसे निद्रा करवी	घ्राण सुंगध दुर्गंधा

विचार	घ्राण द्वारीं	अधो द्वारीं	तृप्ति करी	स्वप्न दावी				नाना व्यसनी	गर्जत

वैरभ वायु विषय वैराग्य धरूनि राहे पूर्ण वळखावी	मुख्य वायु ब हात्तर सहस्र नाडी चेतवी	प्रभंजनवायु अष्टमुद्रिअव री वर्णीं राहुं न येकलीराहे	अंतर्यामी वायु सर्वचे ष्टितहोय	महाप्राण वायु सोहं शब्द पाहे.

इंद्रियें ज्ञान कर्म.

इंद्रिय	श्रोत्र	त्वक्	चक्षु	जिह्वा	घ्राण	नाक	पाणी	पाद	शिश्न	गुद
भूत	नभ	वायु	तेज	आप	पृथ्वी	व्योम	मारुत	अग्नि	जल	मही
विषय	शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गंध					
देव	दिशा	पवन	सूर्य	वरुण	अश्विनौदेव	अग्नि	इंद्र	वामन	प्रजापति	निर्ऋति

भेद	अनक्षर	शीत उष्ण मृदु	श्वेतपीत हरित कृष्ण	गुळचट आंबट	सष्टु	सुवाक्य	देणें	गमन	मूत्र	मळ
काम	अनक्षर	कठिण	मंजिष्ठ	स्वादट तुरट कडवट	दुष्ट	दुर्वाक्य	घेणें	आगमन	विसर्जन	श्रद्धा

पंचविषय.

विराट	भूत	वृत्ति	इंद्रिय	प्राण
शब्द	गगन	अंतःकरण	श्रोत्र वाक्	व्यान
स्पर्श	पवन	मन	त्वक् पाणि	समान
रूप	दहन	बुद्धि	चक्षु पाद	उदान
रस	जीवन	चित्त	जिह्वा शिश्न	प्राण
गंध	भुवन	अहंकार	घ्राण गुद	अपान

छत्तीस तत्त्वांचा विचार सांगितला पृथक् पृथगाकारस्थान मान गुण व्यापार नानाप्रकार सर्वंही आतां चारिदेहांत कैशीं छत्तीस तत्त्वें वसती किती जागती लीनतापावतीस्थूळदेहांत छत्तीस तत्त्वें जागती येथें संशय नाहीं ॥ ६ ॥ ॥ ॥

॥ जागती ॥ (सूक्ष्म देह) ॥ लीन होती ॥

ब्रह्म	माया	महत्तत्व	राजस-गुण	अंतः-करण
मन	बुद्धि	चित्त	अहंकार	व्यान
समान	उदान	अपान	प्राण	पृथ्वी
आप	तेज	वायु	आकाश	

सत्व-गुण	तमो-गुण	श्रोत्र	त्वक्	चक्षु
जिह्वा	घ्राण	वाक्	पाणि	पाद
शिस्न	गुद	शब्द	स्पर्श	रूप
रस	गंध			

॥ जागती ॥ (कारण देह) ॥ लीन होती ॥

ब्रह्म	माया	महत्तत्त्व	तमोगुण	पृथ्वी	आप	तेज

सत्व	रज	अंतःकरण	मन	बुद्धि	चित्त	अहंकार	श्रोत्र

ज्ञा. क्र. १२

वायु	नभ	व्यान	समान	उदान	अपान	प्राण

त्वक्	चक्षु	जिव्हा	घ्राण	वाक्	पाणि	पाद	उपस्थ
गुद	शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गंध		

पं.क्र. १२

॥ जागती ॥ (महाकारण देह) ॥ लीन होती ॥

ब्रह्म	नभ	वायु	तेज	आप	पृथ्वी
व्यान	समान	उदान	प्राण	अपान	

माया	महत्तत्व	सत्व	रज	तम	अंतःकरण	मन
बुद्धि	चित्त	अहंकार	श्रोत्र	त्वक्	चक्षु	जिव्हा
घ्राण	वाक्	पाणि	पाद	शिश्न	गुद	शब्द
स्पर्श	रूप	रस	गंध			

जलजानवलक्षाश्वस्थावरालक्षविंशतिः । कृमयोरुद्रसंख्याश्चपक्षिणोदशलक्षकाः ॥ १ ॥ त्रिंशल्लक्षास्तुपशवश्चतुर्लक्षाश्चमानवाः । पापपुण्यसमायुक्तंब्रह्मयोनिषुजायते ॥ २ ॥ इति मीमांसा ॥ ब्रह्मजिज्ञासाउन्मनी अवस्थेंतसर्वहीतत्त्वेंलीनहोती ॥ पंचात्मकदेहभासउरे ॥ आतांप्राणिजन्मासकसायेतो, त्वंपद्जीवपिंडभगवंतापासूनमायाजाहलीतिनेंअनेकजीवशिवनिर्माणकेलेंहेमुक्तताभोगवूंलागलीनानायोनिसंख्याजमा ८४००००००

३४००००० पिंडज	१९००००० अंडज
४००००० मानव	९००००० जलचर
३०००००० पशु	१०००००० पक्षी
३४०००००	१९०००००

११००००० जारज उद्भिज (कृमि)

२०००००० उद्भिज जारज (स्थावर जाति) ८४००००० लक्षसं०

ज्ञा. क्र. आणिकएकजागींऐसेंबोलिलेंकींविराटापासूनएकएकएकवी पं. क.
सलक्षजाहलेह्मणोनसांगितलेंऐशाचौऱ्याशींलक्षयोनीमायेनें
१४ निर्माणकेल्यात्यासर्वेपरमपुरुषत्यांमाजीप्रवेशूनउंचनीचयोनी
भोगूंलागला ॥ तेथेंआशंकाहोतेपरमात्मस्वरूपनिर्विकारत्यास
मायोपाधिनाहींसुखदुःखनाहींत्यासुखदुःखहोण्यासकारणत-
रिजैसेंगगनघटांतभरलेंसहजचिअसेजिकडेघटजा यतिकडेगगन
हिजाययाआकाशाचेनिअवकाशेंघटराहेपरीघटदैवेंसर्वफुटलेतरी
गगननफुटेमाशुतीजोघटनिपजेत्यामाजीजाउनिराहेतैसाजीवदे
हींमायोपाधीनेंपर,मायोपाधीसुखदुःखजीवासनलगेजेथेंजेजोंअ १४
भिमानीअसतितेतोंभोगिति. आणखीजरीयेथेंआशंकाहोयजो
अभिमानीत्यासआधारकोणतरीजीवाचेआधारसूत्रासखेळव-
णारतोजैसाखेळवीतैशीबाहुलीखेळेबाहुलीचेंसुखदुःखखेळणा

रासनलगेत्याचेनिआधारेंतेंतरीचेष्टयाएकादृष्टांतावरीहजारदृ
ष्टांतदेऊनसज्जनेंसमजावें. अनुभवासीआणावें. आतांसर्वही
असो. हाविस्तारप्राणिजन्मांतरींप्रथमवासनाअविद्येपासूनअना
दिब्रह्महीअनादिमायाही अनादिमायामयजीवसृष्टिहीअनादि
तोअनादिवासनामयलिंगदेहप्रथमपित्याचेउदरींसंचरेतेकोणी
जीवश्वासरंध्रेंकवणफळपानेद्वारेंअथवावृष्टींतअथवाधान्यामाजी
प्रवेशूनपितयाचेउदरींसंचरे ॥ तेथेंसप्तसप्तकइतुकेदिवसवसतेंसप्त
सप्तकांतकायहोतेंतोविस्तारसांगिजेतो ॥ १ ॥ ॥ ॥

ज्ञा. क्र. १५								पं. क्र.
	१	२	३	४	५	६	७	
	प्रथमसप्तकींरस	रससप्तकीं-रुधिर	रुधिरसप्त-कींमांस	मांससप्त-कींमद्य	मेदसप्त-कींमज्जा.	मज्जासप्त-कींअस्थि	अस्थिसप्त कींशुक्र	

एकाउणेपन्नासदिवसशुक्ररूपें पितृकोठारींवासकरूनतेथूनमाते
गर्भकाळीं पितृकोठारांतूनयोनीमुखेंबुद्बुदाकारें त्यांत प्रवेशक
री जरी शुक्र अधिक होय तरी पुरुषत्वपावे मातेचें शोणितअ
धिक होय तरी कन्या होय जरी दोघांचेंसमत्व होय तरी नपुं
सकनिपजे ज्याज्याप्रकारेंस्त्रीपुरुषरमती तसे अवयव होती, तेथें १५
संदेह नाहीं· प्राचीनकर्मांसारिखेंपावे ॥ १ ॥ ॥

आतां सप्तधातूंचा विस्तार.

धातु	रस	रुधिर	मांस	मेद	मज्जा	अस्थि	शुक्र
वर्ण	कपिल	नील	रक्त	मंजिष्ठ	ताम्र	नाना	शुभ्र
भूत	भुवन	आप	तेज	वायु	आकाश	सूर्य	चंद्र

आणिकऊर्ध्व उल्लेख प्राणापानाचेनिबळें योनिमुखें रेत उसळे. तेथें गोळा होय. तेथें नवमासपर्यंत काय काय करी विष्ठामूत्र

मास ९	१	२	३	४	५	६	७	८ ‖ ९
पक्षी अंडाकार	प्रथम मासीं शिर	दुसरे मासीं भुजा	तिसरे मासींउदर, अवयव	चवथे मासीं हस्व, पाद	पांचवे मासीं अस्थि, शिरा	सहावे मासीं त्वचा, रोम	सातवे मासीं नखें, केश	दोनमास जातिस्मरण

ज्ञा. कु. द्वाथरींतून बाहेर पडे कोहं भावरडे आणिक ऊर्ध्व उल्लेख सप्त- पं. क.
धातु मातापितयांच्या,यांचा विस्तार सप्तधातु शरीर जाणिजे
१६ (सप्तधातूंचाविस्तार)

॥ पित्याच्या तीन ॥

अस्थि	शिरा	मज्जा

॥ मातेच्या चार ॥

त्वचा	रोम	मांस	रक्त

ऐसें परीदेह जन्म पावे. आतां या देहाचा विस्तार. देहसप्तधातूंचे निर्मिले. देहांतील व बाहेरील तत्त्वें लेखवेना. औट- कोटि रोमावळी बाहत्तर सहस्त्र नाडी इतुकें बोलिलें त्यामाजील दश मुख्य नाडी यांचा विस्तार. १६

इडा उजवा रेचक.	सुषुम्नामध्यें कुंभक.	पिंगला डावा पूरक.

सूर्यस्वरीं वाहे.	ओंकारध्वनिप्रकाश मान.	चंद्रस्वरीं वाहे.
दैवत हरि नासिकास्थान	ईश्वररुद्रदेवतामध्यें.	ब्रह्मअधिष्ठाननालस्थान.

नाडी.

नाडी	गांधारी	हस्ति-जिव्हा	पुष्पा	पयस्वि-नी	अलंबु-षा	लकुळा	शंखिनी	कुंडलिनी
स्थान	सव्य नेत्र	वाम नेत्र	सव्य कर्ण	वाम कर्ण	गुद	शिश्न	नाभि	
दैवत	इंद्र	वरुण	दिशा	चतुरानन	भूमि	सूर्य	चंद्र	

दश नाडींचा विस्तार सांगितला असे आणीक यांत आहे

ती ब्रह्मा तोही नेणे आतां त्रैविकारादि नाना देहांस बोलिजे
ल तरी सर्व आधार ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ शुद्धनिखळब्रह्म ॥ तेथेंचैतन्यइच्छाआगम॥
महत्तत्त्वमायाउगम ॥ ओंकारउद्भवला ॥ १ ॥ शुद्धचैतन्यतें
निराकार ॥ तेथेंइच्छातेचिमायामोहकार ॥ तेचिअहंअर्धमात्रा
ओंकार ॥ पुरुषप्रकृती ॥ २ ॥ शुद्धब्रह्मइच्छावसे ॥ अविद्यें
पातलोंजीवदशे ॥ जेंवीमहदाकाशघटवशें ॥ भिन्नदिसे ॥ ३॥
तत्पदपरमात्माईश्वरू ॥ त्वंपदजीवात्मासविकारू ॥ जोस्वस्व
रूपाचाविसरू ॥ ते अविद्याबोलिजे ॥ ४ ॥ पूर्णचैतन्यह्म
णिजेपरमात्मा॥प्रत्यक्चैतन्यह्मणिजेजीवात्मा॥ त्रिगुणभूतसाध
नात्मा ॥ प्रपंचबोलिजे ॥ ५ ॥ अर्धमातृकेपासून तीनमातृ
का ॥ अकार उकार मकार देखा ॥ तेथें हरिहरब्रह्मादिकां ॥

हे ब्रह्मांडरचना ॥ ६ ॥ मूळप्रकृति देहमातृका ओंकार ॥ परा
वाचाअभिमानीसर्वेश्वर ॥ सर्वसाक्षीअवस्थाहाविचार ॥ बोलि
लाअसे ॥ ७ ॥ मायादेहरुद्रअभिमानी ॥ पश्यंतीवाचामकार
जननी ॥ प्रळयअवस्थातियेस्थानीं ॥ बोलिली असे ॥ ८ ॥
हिरण्यगर्भदेहउकारमातृका ॥ विष्णुअभिमानीमध्यमावाचादे
खा ॥ स्थितिअवस्थाहे तेथिंचीटीका ॥ बोलिलीअसे ॥ ९ ॥
विराट्देहब्रह्माअभिमानीऐका ॥ सृष्टि अवस्था अकार मातृ-
का ॥ वैखरी वाचाउद्भवसकळिका ॥ वेदांचा तेथें ॥ १० ॥
उत्पत्तिस्थितीसंहार ॥ हाचितिहीं देवांचाव्यापार ॥ आतां
सांगेनपुढिलविस्तार ॥ जीवात्मयाचा ॥ ११ ॥ आतांसागेन
पिंडरचना । जेत्रिविधपंचकाची विवेचना ॥ कवणापासावक-
वणा ॥ विस्तारजाहला ॥ १२ ॥ सात्विक अहंकारापासोन-

देख ॥ जन्मलेंअंतःकरणपंचक ॥ आकळितां वाणीबोलिली
एक ॥ विस्तारू हा ॥ १३ ॥ मनबुद्धिचित्तअहंकार ॥ अंतःक-
रणसर्वव्यापार ॥ येणेंचिद्वारें विवेकसाचार ॥ आत्मयासी ॥ १४ ॥
राजसअहंकारापासून इंद्रियपंचक ॥ श्रवण घ्राणचक्षु रसनात्व-
क् ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधदेख ॥ हेविषयपांच ॥ १५ ॥ वाचा
आणि चरण॥उपस्थेंद्रियगुदस्थान॥ या इंद्रियांचेंदेहींवर्तमान॥
सुष्ट दुष्टकर्मैं ॥ १६ ॥ तामस अहंकारापासाव आकाशजाहलें ॥
आकाशवायू प्रसवलें ॥ वायूपासाव तेज जाहलें ॥ प्रकाशरूप
॥ १७ ॥ तेजापासाव आपजाणा ॥ आपापासावपृथ्वीरचना ॥
पंचभूतेंपंचवीसगुणा ॥ विस्तारिती ॥ १८ ॥ अस्थिमांस-
त्वचा ॥ रोमनाडी अंशपृथ्वीचा ॥ स्थानमुख आहार यांचा ॥
स्वादुसांगेन ॥ १९ ॥ वर्णपिंवळाघरस्वाधिष्ठान ॥ मुख जिव्हा

स्वाद गोडजाण ॥ आहारसुशस्त्रफरश अंकुशखुण ॥ बोलि-
जेली असे ॥ २० ॥ लाळमूत्रशुक्र शोणित ॥ स्वेदगुण आ-
पाचे ह्मणिजेत ॥ घरनाभिआणिवर्णश्वेत ॥ मुखउपस्थ॥२१॥
स्वादुक्षार आहारमैथुनशस्त्रसुरी तेथून ॥ जाहलें आपाचें व्या-
ख्यान ॥ आतां सांगेनतेजाचे गुण ॥ विस्तारूनी ॥ २२ ॥
क्षुधातृषानिद्रा आलस्य ॥ कांति हा तेजाचा अंश ॥ वर्णर-
क्ताचा तयाचा असेवास ॥ हृदयस्थानीं ॥ २३ ॥ मुखनेत्रदे-
खणें आहारु ॥ स्वादतिखटशस्त्रभाला हा तेजाचा व्यापारू ॥
आतां सांगों पुढीलविस्तारू ॥ वायुतत्वाचा ॥ २४ ॥ धावन-
वलनआकुंचन ॥ प्रसरणआणि निरोधन ॥ हे वायूचे गुण
जाण ॥ निर्धारेशीं ॥२५॥घरकंठस्थानवर्णनील ॥ मुखनासिक
स्वादुअम्ल ॥ शस्त्रवोडन खांडे आहारू परिमळ ॥ बोलिला

असे ॥ २६ ॥ क्रोधलज्जा भय उद्वेश ॥ मोहो हा आका-
शाचा अंश ॥ याचा असे रहिवास ॥ ललाटप्रदेशीं ॥ २७॥
मुख श्रवण आहार ऐकणें ॥ वर्णकाळास्वादकदुजाण ॥ शस्त्रध
नुष्यबाण हें लक्षण ॥ आकाशाचें बोलिलें असे ॥ २८ ॥
आपनिजेपृथ्वीबोले ॥ तेजदेखेवायोचाले ॥ आकाशऐकोनि
डोले ॥ आपुलेठायीं ॥ २९॥ आतांसांगेनआणिक विचारू॥
देहींदशवायुनामउच्चारू ॥ याचापृथक्पृथकूव्यापारू ॥ सा-
क्षित्वेंनिर्धारू बोलिला असे ॥ ३० ॥ प्राण व्यान आणि अ-
पान ॥ उदान देहीं व्यापक समान ॥ नागकूर्मकृकलदेवदत्त
धनंजय जाण ॥ दशप्राणहे ॥ ३१ ॥ प्राणश्वासोच्छ्वासींयेर
झार करी ॥ व्यापारें अन्नोदक आहारीं ॥ व्यानरस धातूंतें
तेणेंशरीरीं ॥ पुष्टिदिसे ॥ ३२ ॥ अपानें मळमूत्रसारणें ॥ उ-

१९

दानें देहांतकाळीं प्रगट होणें ॥ समानेंसर्वसंधीं बैसणें ॥ ल-
वती हातपाय ॥ ३३ ॥ नाग्रु वसे ताळुकाकमळीं ॥ कूर्मंदृष्टी
न्याहाळी ॥ कृकलकर्णमंडळीं ॥ लुब्ध जाहला ॥ ३४ ॥
देवदत्तमुखामाजि असे ॥ धनंजयोनाकींवसे ॥ हे पांचही
पवन ऐसे ॥ ब्रह्मांडीं असती ॥ ३५ ॥ जांभई देवदत्ताची ॥
शिंकधनंजयाची ॥ कृकलेंहास्यरुदनाची ॥ स्थिति बो-
लिली असे ॥ ३६ ॥ नागपांचांनगिवसी ॥ कूर्म उन्मळी ने
त्रासी ॥ दशपवनांचीकरणीऐसी ॥ जाणिजेपैं ॥ ३७ ॥ कृ
कल आकाशाचा ॥ नाग वायूचा कूर्मतेजाचा ॥ देवदत्तआपा
चा ॥ पृथ्वीचाधनंजयो ॥ ३८ ॥ ऐसीहे प्राणसांखळी ॥ वर्त
त असे देहाचेमेळीं ॥ आणि प्राणें वीण कदाकाळीं ॥ जीवभा
वनदिसे ॥३९॥ ऐसीया रचिलीयाप्रपंचस्थळा ॥ सांगितलि

यासाक्षित्वेंकळा ॥ याप्रपंचवृक्षाचानिर्वाळा ॥ प्रणव बीजा
पासोनी ॥ ४० ॥ असोहातत्त्वयोग ॥ छत्तिसतत्त्वांचाक्षेत्रवि
भाग ॥ हें जाणे तो अध्यात्मीं चांग ॥ येरु तोमंदमतिया ॥ ४१ ॥
तत्त्वांचे पांच पांच गुण ॥ मागें सांगीतलें प्रमाण ॥ तोविभा
गवांटून ॥ एकेकासींदिवो ॥ ४२ ॥ अस्थिमांस त्वचा ॥ रो-
मनाडी भागपृथ्वीचा ॥ आपीं मांस तेजीं त्वचा ॥ नाडीवा
यूसी ॥ ४३ ॥ रोमदिधले आकाशीं ॥ अस्थिठेविल्या आ-
पासी ॥ ऐसीयापांचांशीं ॥ पृथ्वीमिळाली ॥ ४४ ॥ स्वेदमूत्रर
क्त ॥ लाळ आणिशुक्रयेत ॥ मूत्रआपतेजींरक्त ॥ लाळवा
योसी ॥ ४५ ॥ वीर्यतें आकाशीं ॥ स्वेदपृथ्वीयेसी ॥ आपपां
चांशीं ॥ मिळालें ऐसें ॥ ४६ ॥ क्षुधातृषा आळस ॥ मैथु
ननिद्रा तेजाचा अंश ॥ क्षुधातेजाची तृषा दिधली आपास ॥

मैथुन दिधलें वायूसी ॥ ४७ ॥ निद्रादिधली आकाशीं ॥
आळस दिधला पृथ्वीयेसी ॥ तेजाची वांटणी ऐसी ॥
पांचाठायीं ॥ ४८ ॥ धावनवलननिरोधन ॥ आकुंचन प्रस
रण ॥ आकाशीं दिधलें प्रसरण ॥ धावन आपणापें ॥ ४९ ॥
निरोधनदिधलें तेजासी ॥ वलनदिधलें आपासी ॥ आ
कुंचनपृथ्वीसी ॥ वायोनेंदिल्हें ॥ ५० ॥ मोहोलज्जाराग ॥
भयद्वेषुचांग ॥ हे आकाशाचेविभाग ॥ पांचाठायींदीजे ॥
॥ ५१ ॥ भयराहिलेंआकाशीं ॥ द्वेषुदिधलावायूसी ॥ रागदि-
धलातेजासी ॥ लोभुतोआपीं ॥ ५२ ॥ मोहोदिधलापृथ्वीसी ॥
हेपाचांची वांटणी ऐसी ॥ हें कळलियावीण मानसीं ॥ परिचयो
नये ॥ ५३ ॥ लिंगदेहाचीं तत्त्वें जाण ॥ तिये वांटिजती त्याजप्रमा
ण ॥ एकचि तें परिमाण ॥ परिसावें ॥ ५४ ॥ पंचमहाभूतांचे

विशेषगुण ॥ शब्दस्पर्श रूपरस गंध जाण ॥ अंतःकरण घेऊन
जाण ॥ वावरतसे ॥ ५५॥ अंतःकरण मन बुद्धि चित्त अहंका
 र ॥ पांचहीप्रापंचकश्रोत्र ॥ वाचा पंचकमेळा सर्वत्र ॥ वर्त
त असे ॥ ५६ ॥ यासूक्ष्मभूतांचा विस्तार ॥ एक एकाचापं-
चधाप्रकार ॥ परस्परें मीनला तोविचार ॥ आईक श्रीराम ॥
॥५७॥ आतां पृथ्वीचे पांचगुण ॥ अहंकार अपान घ्राण ॥ गं-
धगुद जाण ॥ हेपृथ्वीचे ॥ ५८ ॥ अहंकारूदिधला आका
शीं ॥ अपानदिधलावायूसी ॥ घ्राण दिधला तेजासी ॥
गंधदिधला आपीं ॥५९॥ आपुलेस्थानीं गंध आवरी ॥ पृथ्वी
मिळाली ऐशियापरी ॥ आतां आपाचे गुण पांच परी॥मिळा
ले कैसे ॥६०॥ चित्त आणी प्राण ॥ जिह्वा रस शिश्न ॥ चित्त
आकाशीं वायोसी प्राण ॥ जिव्हा तेजीं ॥ ६१ ॥ रस ठेवि-

ला आपीं जाण ॥ पृथ्वीदिधली शिश्न ॥ मिळणी आपाची
हेखुण ॥ सांगितली ॥ ६२ ॥ तेजाचेगुण तद्रूप ॥ बुद्धिउदा
न चक्षुरूप ॥ पाद सहित समीप ॥ वांटोनिदिधले ॥ ६३ ॥
बुद्धिगुण आकाशीं ॥ उदान दिधला वायूसी ॥ चक्षु आप
णापासीं ॥ तेंजेंठविलें ॥ ६४ ॥ रूपआपीं दिधलें ॥ पादपृ
थ्वीसीठेविले ॥ आतां आइका वहिले ॥ वायूचेपांच ॥ ६५॥
मन समान त्वचा जाण ॥ स्पर्श पाणि वायूचे गुण ॥ आका-
शींदिधलें मन ॥ समान आपुले ठायीं ॥ ६६ ॥ त्वचादिधली
तेजासी ॥ स्पर्शदिधला अपासी ॥ पाणी पृथ्वीसी ॥ वायो
मिळाला ॥ ६७ ॥ आकाशाचेपांच अंकुर॥अंतःकरण व्यान-
श्रोत्र ॥ शब्द वाचासार ॥ आकाशाचे ॥ ६८ ॥ अंतःकरणअं
श आपला ॥ व्यानतो वायूसी दिधला॥श्रोत्र अंशु ठेविला ॥

तेजापाशीं ॥६९॥ शब्द आपाचे ठायीं ॥ वाचादिधलीमही ॥
यापरी पांचाठायीं ॥ अंतःकरण वावरे ॥ ७० ॥ पांचांचेपं
चवीस गुण ॥ देहींवावर चरण ॥ हापरिचयो कळल्याविण ॥
योगसाधन नव्हे ॥ ७१ ॥ इति श्रीपंचीकरण महावा-
क्ये प्रथमः समासः ॥ ॥ समाप्त ॥ ॥ ॥
शरीरींमार्गु वसेत्रिशून्याचा ॥ तिहींसी तिव्हडा ओंकारा-
चा ॥ चवथेंशून्य भवबंधाचा ॥ ठावोचिपुसे ॥१॥ तरीप्राणआ
णिअपान ॥ दोन्हीमावळती नेत्रींशून्य ॥चौथें सर्वव्यापक गह
न ॥ मोक्षमुक्ति पदतें ॥ २ ॥ अधःशून्य आणि मध्यशून्य॥
ऊर्ध्वंशून्य आणि चतुःशून्य ॥ शुद्ध चैतन्यतें निःशून्य ॥
शून्यतें बोलिजे ॥ ३ ॥ अधःशून्य म्हणिजे अकारू ॥ मध्यशू
न्यम्हणिजेउकारू ॥ उर्ध्वशून्यम्हणिजे मकारू ॥ ओंकार

तेंचैतन्य ॥ ४ ॥ याचतुःशून्यांहूनी परतें ॥ तें सोहं ब्रम्हजा-
णिजे निरुतें ॥ तेंथें शून्य हाशब्दनिवर्तें ॥ नित्य म्हणोनियां॥
॥५॥ इयें महाशून्यें बोलिलों चतुर्विधें॥ आणीकपिंडीं चारीप्र
सिद्धें॥तेंतूं ऐक एकचित्तविनोदें ॥ गुरुपुत्रा॥६॥श्लोक॥ अधः
शून्यंमनोभूतंऊर्ध्वशून्यंच मारुतः ॥ मध्यशून्यंच जीवात्माच
तुर्थं ब्रह्मनिश्चयः ॥ १ ॥ टीका ॥ अधःशून्य जा-
णिजे मन चंचळ ॥ उर्ध्वशून्य तें पवन सबळ ॥ मध्यशून्यजी
वचौथेंकेवळ ॥ परब्रह्म जाणिजे ॥ ७ ॥ जें निर्गुणनिराकार ॥
निःसंगनिर्विकार ॥ निष्प्रपंचनिराधार ॥ पूर्ण घनतें ॥८॥ आ
णीकएक तार्किकाचेंमत ॥ ते ओंकारावरतें शून्य बोलत॥प-
री तें जाणावें जीवकृत ॥ प्रमाणयुक्त तें नोहे ॥९॥ क्षरंतोचि
दाकाशसर्वभूत ॥ अक्षर तोनिर्गुण कूटस्थ ॥ या क्षराक्षरां-

ज्ञा. रू. सी व्यावृत्त ॥ तो पुरुष उत्तम ॥१०॥ जोक्षराक्षरातीत तूं ॥ पु- पं. क्र.
रुषोत्तम नामविख्यातु ॥ वेदशास्त्र पुराण भरितु ॥ नामाना
२३ मातीतु जो॥११॥ ऐसें हें 'तत्त्वमसि' महावाक्य॥जाणितलेंया
जीविश्वरांसी ऐक्य ॥ आणि प्रणवबीजीं त्रिगुण वयपंचक॥
तें पंचीकरणीं बोलिजे ॥१२॥ ब्रह्म सागरीं तरंग उठिले॥ते
निजरूपासी विसरले॥ अविद्यावशें जीवत्व नाव ठाकिलें ॥
देहादिकीं ॥ १३ ॥ जैं होय ज्ञानसूर्याचा प्रकाशु॥ तेंचिअवि-
द्या तमासी नाशू ॥ शुद्धासी झालियाब्रह्मसौरसू॥ दिधलाते-
जासीपैं ॥१४॥ ॥ इति महावाक्येद्वितीयः स० समाप्तः॥२॥ २३
अथ अजपापिंडींचा श्लोक ॥ आधारेलिंगनाभौ प्रकटितहृ
द्ये तालुमूले ललाटेहद्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशा-
र्द्धे चतुष्के ॥ वासांते बालमध्ये डफकठ सहिते कंठदेशे स्वरा

णां हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ टी
का ॥ आधारगुह्यकस्थानवर्ण रक्ता ॥ ऋद्धि सिद्धि गणेश देव
ता ॥ ईश्वरदेव चतुर्दळीं अवस्था ॥ जप सहाशतें ॥ १ ॥ स्वा-
धिष्ठान लिंगस्थानीं पीतवर्ण ॥ अग्निदेवता ब्रह्माऋषि आप-
ण ॥ सावित्री शक्ति षड्दलीं स्मरण ॥ जप सहा सहस्र ॥२॥
मणिपूरचक्र नाभिस्थानीं वर्णनिळा ॥ विष्णु देवता आणि
शक्ति कमळा ॥ वायो ऋषी त्या दशदळा ॥ जपुसहासहस्र
॥ ३ ॥ अनुहातचक्र हृदयस्थानीं ॥ उमा शक्ति देवता पिना
कपाणी ॥ सूर्य ऋषीशोभाद्वादशदळामणी ॥ जपुसहस्रस
हा ॥ ४ ॥ विशुद्धचक्र कंठस्थान शुभ्रवर्ण ॥ तेथें जीव देवता
अविद्याशक्तिजाण ॥ चंद्रऋषी षोडशदलीं स्मरण॥जपुसहस्रये
कू ॥५॥ अग्निचक्र ज्योती पीतवर्ण भ्रुवांतरीं॥ तेथेंमायाशक्ति

हंसऋषी निर्धारीं ॥ परमहंस देवता त्याद्विपत्रीं ॥ जपु एकस-
हस्र ॥ ६ ॥ सहस्रदळ ब्रह्मरंध्रींनिर्धारितां ॥ तेथें गुरुदेव ऋषी
परमदेवता ॥ तेथें ज्ञानशक्ति ऊर्ध्वद्वारें संचरता ॥ पवनु संचरे
॥ ७ ॥ सहस्रदळ हें अहंकाराचें मूळ ॥ अनेक वर्ण नानाध्वनी
बहळ ॥ सहस्रएक जपु सोहंबीज केवळ ॥ तेंगुरुस्थान ह्मणि
जे ॥८॥ वपासूनिचारी अंतरीं ॥ ये अक्षरें जाणावीं आधारीं॥
वपासुनीळभीतरीं ॥ हेस्वाधिष्ठानीं ॥ ९ ॥ डपासूनिफपर्यंत
जाणा ॥ मणिपुरीं अक्षरांची गणना॥कपासूनिठकार नाम्ना ॥
अनुहतचक्रीं ॥ १० ॥ ओम् पासोनि पांच वेगळीं करूनी ॥
येरें अक्षरें विशुद्ध स्थानीं ॥ द्विदळीं हंक्षंदोनीं ॥ उरलें तेंबीज
॥ ११ ॥ ऐसीहे अजपा बावन्न अक्षरींबीज ॥ यामध्यें सोहंश-
ब्द तो मंत्रबीज ॥ एकवीस सहस्र सहाशतें जपसहज ॥ श्वासो

च्छासीं ॥ १२ ॥ ॥ इतिश्री महावाक्ये पंचीकरणे अजपाज
पे समासः तृतीयः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अथ अजपा ब्रह्मांडींची ॥ ॥ त्रिकुट श्रीहटगोल्हाट ॥ पादुका
तळीं औटपीठ ॥ भ्रमर गुंफा ब्रह्मरंध्रशेवट ॥ तेंचस्थान आत्म
याचें ॥ १॥ मुखीं बोलिजे त्रिकुट ॥ तेथें पृथ्वीयेसणा ऋषिश्रे
ष्ठ ॥ आचारलिंगऋग्वेद प्रगट ॥ पाहेतेथें ॥ २ ॥ तेथें जागृती
अवस्थेचीपरी ॥ कमळासनु देवता अवधारी ॥ येंसमस्तें हेम
वर्णसाजिरीं ॥ दिसती सुरंगें ॥ ३ ॥ रसनेंनेहटीश्री हटस्था
न ॥ तेथें आप ऋषी नांदे आपण ॥ गुरुलिंगयजुर्वेद कारण ॥
जाणिजेतेथें ॥ ४ ॥ तेथें पाहेपां स्वप्नावस्था ॥ आणि कमला
वल्लभदेवता ॥ क्षीरवर्ण तया समस्ता ॥ शोभादेती ॥ ५ ॥ च-
क्षुस्थानीं गोल्हाट कमळ ॥ तेथें तेजऋषी करी सळाळ ॥

शिवलिंग सामवेदी केवळ ॥ असे तेथें ॥ ६ ॥ सुषुप्ति अवस्था
तियेस्थानीं ॥ आणि देवता पिनाकपाणी॥विमलवर्ण समस्तें-
२५ मिळोनी ॥ दिसती सुरंगें ॥७॥ या त्रिअग्रावरी औट पुण्यगि-
रि ॥ तेथें वायु ऋषी बोले नानापरी ॥ जंगमदेवलिंग देवउच्चा-
री ॥ अथर्वणजो ॥८॥ तेथें तुर्यावस्थाचौथी ॥ आणि ओंकार
देवता म्हणती ॥ तीं अवघीं नीळ वर्णशोभती ॥ समस्तें तेथें
॥९॥ श्रोत्रस्थानीं गुंफा भ्रमर ॥ तेथें आकाश ऋषी महाथोर॥
प्रसादलिंगीं होय उच्चार ॥ सूक्ष्म देवाचा ॥ १० ॥ एकयभा-
वेंउन्मनीबाळी ॥ आणि सदाशिव देवता जवळी ॥ यासी कृ
ष्णवर्णाची झळाळी ॥ मिरवतसे ॥ ११ ॥ सहस्रदळीं ब्रह्मरं २५
ध्रभुवन ॥ तेथें नाहीं वेद अवस्था देवता वर्ण ॥ तेथेंसर्वांसी ल
यो होय जाण ॥ गुणचक्रांसी ॥ १२ ॥ तेथें कोटि प्रकाशती

प्रकार ॥ आणि वोपदेती कोटिचंद्र॥तैसा समाधिसुखशेजार॥
परात्पर परम भुवन ॥ १३ ॥ ॥ इतिब्रह्मांडींची आजपास०
आतां पवनक्रिया अवधारी ॥ इडापिंगलासुषुम्नामाझारी ॥
यांचें भिन्न सामर्थ्य दिसे शरीरीं ॥ तेपवनसिद्धि ॥ १ ॥
वामें इडा दक्षिणें पिंगला ॥ मध्यें सुषुम्ना त्रिवेणीचा मेळा ॥
तेथें अमृत वर्षे सत्रावीचा जिव्हाळा ॥ तेंसेविलिया
अमरत्व पाविजे ॥ २ ॥ उष्णकाळीं पीडतां तळिया
उन्हें ॥ तरी तो अधोचंद्र तो ऊर्ध्वं करी पवन॥ तरी शीतळता
होय प्राण ॥ संतोष मानिजे ॥३॥ शीतकाळीं हिंवें पीडिलि
यात्वचा ॥ तरी अधोसूर्यतोऊर्ध्वं करीपिंडींचा ॥ तरीआश्रयो
नलगे अग्नीचा ॥ प्रावर्णकथाहीनलगे ॥ ४ ॥ क्षुधा काळींउ-
दितहोतां प्राण ॥ तैंसत्रावीचें कीजे दोहन॥ दोहींची निवर्तेभू

कतहान ॥ भोजनाची चाड नाहीं॥५॥ परी देहीं साधिलेंना-
हीं कवणा॥वाउगाचिकरिती बोलण्याचा उगाणा ॥ नानावेष
धरूनिजना ॥ नाडित असती ॥६ ॥ ऐसीयेपवन अभ्यासींप्र-
 वर्तोनी ॥ काळवंचना आत्मज्ञानी ॥ धरूनी भाव अंतःकर
णीं ॥ अमर व्हावयाचा ॥७॥ ॥ इतिश्री पवन प्रकरण संपू०
असो हें एक आतां अवधारीं ॥ अष्टदल कमल असे हृद-
यावरी ॥ तेथें मनमधुकर भ्रमण करी ॥ निरंतर ॥ १ ॥ पू-
र्वदळ श्वेतवर्ण जाणा ॥ तेथें जरी प्रवेशु होयमना ॥ तरी
धैर्य उदार पुण्य पावना ॥ उपजे देहीं ॥२॥ अग्निवर्ण बोलिजे
रात ॥ तेथें जरोमनाची होयस्थिरता॥ तरी आलस्य उद्वेगचि
त्ता ॥ कांशोक उपजे ॥३॥ दक्षिणदळीं वर्ण बोलिजे काळा॥
तेथें मनसंचरे जरावेळा ॥ तरी क्रोधद्वेष दुष्ट वासने वेगळा ॥

नव्हे देहो ॥४॥ नैऋत्या कोनींचें पातें बोलिजेनिळें ॥ तेथंज
रीमनमधुकरखेळे ॥ तरीवित्तपुत्र मोहो जाळें ॥ गुंतलाठाके
॥ ५॥ पश्चिमदळीं पीतदर्णबोलिजेत ॥ तेथें मन जरीसंचरत॥
तरी क्रीडाविनोद आनंदभरित ॥ सुखियाहोय ॥ ६ ॥ वा
यव्यकोनींचें पातें शामवर्ण जाणावें ॥ तेथं जरी मन स्थिरावे॥
तरीतीर्थासिगमन उपजे जावें ॥ साधुदर्शनासी ॥७॥ उत्त
रपाकोळिकाबोलिजे नीलवर्ण ॥ तेथेंजरी संचार करी मन ॥
तरी अष्टभोग सुख जाण ॥ करूं उपजे ॥ ८॥ ईशान्य को-
णीं पाको बोलजे गौर उत्तम ॥ तेथें जरी होय मनासी-
विश्राम ॥ तरीश्रवण कीर्तन हे धर्म ॥ उपजतीदेहीं ॥९॥ म-
नासी प्रवेश जालेया संधी ॥ तरी आत्मापिडे रोगव्याधी॥म-
ध्यें स्थिरावलियानिद्रा समाधी॥ तरी विश्रांतीउपजे॥१०॥ऐ

 सीएक प्रहराचेनिमानें ॥ मन कळिके भ्रमणें ॥ करी अनुसंधा
नें ॥ ऐसीं अष्टदल कमलें ज्ञानें ॥११॥ ऐसेंहें परमार्थसाधनें ॥
 परउपकारार्थ बोलणें ॥ वसिष्ठरामसंवाद कथनें ॥ ह्मणेज्ञा
न देवो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसाहामनमार्गविचारितां ॥ संदेहनिवृत्तिनोहेऐकतां ॥ हा
जीवसहजसुखदुःखभोगिता ॥ तरी कर्म कायकीजे ॥ १ ॥
ह्मणोनि हे साहावीयाचीकुडे ॥ काजेंजिवासीसदासुखदुः
खआवडे ॥ तरीमनाचेनिसंगेंसुखभोगाकडे ॥ केविंजाय
॥ २ ॥ जरीपाकोळिकेसंगेंपालटुमनीं ॥ तरीइंद्रियेंनेष्ठुकरिती
खंडज्ञानें ॥ आणिसंगरहितहोउनी ॥ मुक्तिपावलेकीं ॥ ३ ॥
आतांऐक तार्किकांचापक्ष ॥ तेशास्त्राचारेंमानितीमोक्ष ॥
ह्मणतीवस्तुदेखिजेप्रत्यक्ष ॥ इहींचीडोळां ॥ ४ ॥ तरी चाच-

रीभूचरीखेचरी ॥ चौथीबोलिजेअगोचरी ॥ तेदृष्टिद्वारेंल
क्षितांनिर्धारीं ॥ मानितीमोक्ष ॥ ५ ॥ चाचरीतेआडवीदृष्टि
नपाहणें ॥ भूचरीनासाग्रींलक्षलावणें ॥ खेचरीआकाशीं
लक्षधरणें ॥ तिमिरातें ॥ ६ ॥ अगोचरीह्मणिजेनेत्रींचीमि-
ळणी ॥ अंतरींअवलोकितीबैसोनिआसनीं ॥ ह्मणतीव-
स्तुद्रष्टातत्त्वज्ञानी ॥ आपणासीची ॥ ७ ॥ परिहेंअवघेंचि-
खंडज्ञान ॥ जंववरीदेहींअसेवर्तमान ॥ हेदेहनासलियाना-
हींदर्शन ॥ डोळियाचें ॥ ८ ॥ विदेहेंवर्ततांदृष्टीनासे ॥
मगकवणचिपदार्थनदिसे ॥ हातींधरोनिवागवितीमाणसें ॥
आंधळेह्मणोनी ॥ ९ ॥ ह्मणोनिहेवस्तुसर्वांहूनीसार ॥ पाहतां
वेदासीअगोचर ॥ तेंदेखिलियानाहींपार ॥ देहधर्मांचि ॥ १० ॥
त्यासीनाहींकामक्रोधद्वेषराग ॥ मदमत्सरविषयस्त्रीसंग ॥ त्या-

देखणेंयासीनाहींभंग ॥ घटमठभंगीं ॥ ११ ॥ आणिजरीवस्तु-
देखिजेइहींडोळां ॥ लाहिजेब्रह्मानंदाचासोहळा ॥ तरीविषय-
 सुखअमंगळा ॥ कांसेवीतअसती ॥ १२ ॥ जैसेंपरिसाचेंझालि
यास्पर्शन ॥ लोहाचीजरीनफिटेकाळिमाहीन ॥ तरीकायमा-
नावेंसाचपण॥परिससंयोगाचें ॥ १३ ॥ ह्मणोनिहेंबोलतांदूषण
असे ॥ जेंकांइहींडोळांपरवस्तुदिसे ॥ तरिमगतयासूर्यादिकांचे-
निप्रकाशें ॥ कायकाज ॥१४॥ ह्मणोनितरिहेंअवघेंचिमृगजळ॥
वाउगेशब्दांचेपाल्हाळ ॥ जोदेखेपरवस्तुकेवळ ॥ तयाअनंत-
डोळे ॥ १५ ॥ तरीचदेखणीयाचा अर्थूघडे ॥ जरीसर्वदैवदा-
रिद्र्यविघडे ॥ परीकुकर्मींपडिलेबापुडे॥ अनाथजीवहे ॥१६॥
ह्मणोनिआधींवस्तुशास्त्रेंपाहिजे ॥ मगआत्मनिष्ठेकरोनीपा-
विजे ॥ तरीयापरब्रह्ममिश्रितहोइजे ॥ जेवींलवणजळीं ॥१७॥

जैसी कीडी भृंगीजळका ॥ तियेसी पालटुंभिगीरटी-
जवळिका ॥ तैसें देखिलिया ब्रह्मव्यापका ॥ मगजीवदशाकैं-
ची ॥ १८ ॥ जैसें अंजनसुदेलियापायाळा ॥ भूमीफोडोनि-
निधानदिसेडोळां ॥ तैसीवस्तुदेखिलियाएकवेळां ॥ व्यवसाय
नाहीं ॥ १९ ॥ ॥ इतिश्रीज्ञानदेवकथितंमहावाक्यपंचीक-
रणम् समाप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आरती ज्ञानदेवाची.

होतांकृपातुमचीपशुबोलेवेद ॥ निर्जीवचालविलीभिंतीअ-
गाध ॥ भगवद्गीताटीकाज्ञानेश्वरिशुद्ध ॥ करुनीभाविकलोकां
केलानिजबोध ॥ जयदेवजयदेवजयज्ञानासिंधु ॥ नामस्मरणेंतु-
मच्यानिरसेभवबंधु ॥ जय० ॥ १ ॥ चौदाशेंवरुषांचेतपीतिर-
वासी ॥ येऊनिचांगदेवलागतिचरणासी ॥ करुनीकृपादेवेंअनु
ग्राहिलेंत्यांसी ॥ देऊनिआत्मज्ञानकेलासहवासी ॥ जयदेवज-
य० ॥ २ ॥ समाधिसमयींसकळसंतसमुदाव ॥ घेउनिसुरवर
आले श्रीपंढरिराव ॥ द्वारींअजानवृक्षसुवर्णपिंपळअसुमाये ॥
जाणुनिमहिमानीळाचरणातळिंराहे ॥ जयदेवजय० ॥ ३ ॥

गुरुमाळिका.

१ आदिनाथ.	२ मत्स्येंद्रनाथ.	३ गोरक्षनाथ.
४ अद्वयानंद.	५ गैनिनाथ.	६ निवृत्तिनाथ.
७ ज्ञानदेव.	८ सोपानदेव.	९ मुक्ताबाई.
१० सच्चिदानंदबावा.	११ विसोबाखेचर.	१२ चांगदेव.
	१३ भोजलिंगबावा.	

बाळकृष्ण लक्ष्मण पाठक यानीं,

मुंबईंत

'गणपत कृष्णाजी' छापखान्यांत छापिलें.

इति पंचीकरण समाप्त.

[OrderDescription]
,CREATED=15.07.20 15:16
,TRANSFERRED=2020/07/15 at 15:23:48
,PAGES=65
,TYPE=STD
,NAME=S0003333
,Book Name=M-2784-PANCHIKARAN
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF

FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF

FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF

FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF

FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,